

## श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 12: माया और भगवान शिव

14 September 2026



भगवान शिव देवी पार्वती के साथ वैकुण्ठ आते हैं, उन भगवान के दर्शन को जिन्होंने एक मनोहर सुन्दरी का रूप धारण कर देवताओं को अमृत दिया। श्रद्धा से स्वीकार किए जाकर महादेव अत्यन्त गहन स्तुति करते हैं — और फिर अपनी ही आँखों से भगवान की मोहिनी दिव्य शक्ति के दर्शन की याचना करते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। यह सुनकर कि भगवान ने अपने मोहिनी रूप से असुरों को छला और देवगणों को अमृत प्रदान किया, भगवान शिव देवी पार्वती के साथ उस अद्भुत रूप के दर्शन हेतु वैकुण्ठ आते हैं। आठवें स्कन्ध का यह द्वादश अध्याय समस्त ग्रन्थ में सबसे गहन में से एक है: इसमें भगवान शिव की विष्णु को परम सत्य रूप में महिमामण्डित करती हुई भव्य स्तुति है, और फिर यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार स्वयं शिव — योगियों में अग्रणी — भगवान की मोहिनी शक्ति, माया, के प्रकट होने पर क्षण भर के लिए अभिभूत हो जाते हैं। यह कथा शिव को छोटा दिखाने के लिए नहीं, अपितु एक महान सत्य प्रकट करने के लिए कही गई है: कि केवल भगवान ही माया से परे हैं, जबकि अन्य सब, चाहे कितने ही उन्नत हों, उसके अधीन हैं — और इसे पहचानना ही एक प्रकार की मुक्ति है।

## अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 12 (द्वादश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान की मोहिनी शक्ति और भगवान शिव का विनयन
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — भगवान शिव की स्तुति तथा भगवान विष्णु के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: वैकुण्ठ, भगवान विष्णु का धाम; समीप का एक पुष्पित उद्यान
- केन्द्रीय विषय: भगवान शिव की विष्णु की स्तुति; भगवान द्वारा अपने मोहिनी रूप का प्रकटन; शिव का माया से क्षणिक मोह और उनकी पुनर्स्थिति; भगवान की मोहिनी शक्ति की महिमा
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 12, श्लोक 1-47
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

## पिछले अध्याय का सन्दर्भ

एकादश अध्याय में देवताओं और असुरों का युद्ध अपने अन्त तक पहुँचा, और अमृत सुरक्षित होते ही नारद ने देवताओं को रोक दिया। यह समाचार कि किस प्रकार भगवान ने अपने मोहिनी रूप में असुरों को छला और देवताओं को अमृत दिया, लोकों में फैल गया। यह अध्याय उठाता है कि किस प्रकार वह समाचार कैलास पर भगवान शिव तक पहुँचा और उन्हें वैकुण्ठ की ओर खींच लाया।

## भगवान शिव वैकुण्ठ आते हैं

यह सुनकर कि श्रीहरि ने एक मनोहर सुन्दरी का रूप धारण कर असुरों को मोहित किया और स्वर्ग की सेनाओं को अमृत दिया, भगवान शिव देवी पार्वती के साथ अपने वृषभ पर सवार होकर, अपने गणों से घिरे, भगवान विष्णु के धाम वैकुण्ठ में उनके दर्शन को गए। उचित श्रद्धा से स्वीकार किए जाकर और सुखपूर्वक बैठाए जाने पर, भगवान शिव ने मुस्कराते हुए श्रीहरि को नमस्कार किया और स्तुति की।

श्रीमहादेव उवाच

देवदेव जगद्व्यापिज्जगदीश जगन्मय ।

सर्वेषामपि भावानां त्वमात्मा हेतुरीश्वरः ॥ ४ ॥

श्रीमहादेव उवाच देवदेव जगद्व्यापिज्जगदीश जगन्मय सर्वेषामपि भावानां त्वमात्मा हेतुरीश्वरः

अर्थ: भगवान महादेव ने कहा — हे देवों के देव, हे विश्व में व्याप्त तथा विश्वस्वरूप, हे विश्व के नियन्ता, आप ही समस्त पदार्थों के आत्मा, कारण और ईश्वर हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 12, श्लोक 4)

शिव ने भगवान की स्तुति ब्रह्म रूप में की, समस्त सत्य और समस्त चेतना, जिनसे विश्व उत्पन्न होता है, जिनमें स्थित रहता है और जिनमें लीन होता है — अविकारी परम, शुद्ध आनन्द-स्वरूप, अद्वितीय। जैसे आभूषण में ढला स्वर्ण फिर भी स्वर्ण ही रहता है, उन्होंने कहा, वैसे ही जगत की प्रतीयमान विविधता केवल भगवान ही अपने अनेक रूपों में हैं; मनुष्य अज्ञानवश ही उनमें भेद का आरोप करते हैं। न वे स्वयं, न ब्रह्मा, न महर्षि — सब सत्त्वमय जीव जिनकी बुद्धि अब भी भगवान की माया से आवृत है — उस विश्व को पूर्णतः जान सकते हैं जिसे भगवान ने रचा है, फिर उनके अपने स्वरूप की तो बात ही क्या।

फिर भी शिव की अपनी स्तुति में ही यह संकेत छिपा है कि ऐसे शब्द उन्हें मोह से क्यों नहीं बचा सके। उन्होंने स्वीकार किया कि विभिन्न दर्शन भगवान को भिन्न-भिन्न रूप में समझते हैं — कोई निराकार ब्रह्म के रूप में, कोई सनातन कर्तव्य की शक्ति के रूप में, कोई प्रकृति और पुरुष दोनों से परे दिव्य पुरुष के रूप में, तो कोई अनेक दिव्य शक्तियों के स्वामी के रूप में (श्लोक 9) — और प्रत्येक दृष्टि केवल सत्य का एक अंश ही ग्रहण करती है। इसी स्तुति में शिव कहते हैं कि भगवान तक पूर्णतः दार्शनिक ज्ञान से नहीं, अपितु उस शुद्ध भक्त के द्वारा पहुँचा जाता है जो कुछ भी अपने लिए न चाहते हुए निरन्तर उनके चरणों की प्रेममयी सेवा में लगा रहता है (श्लोक 6)। आगे आने वाली कथा में यही शिक्षा चुपचाप छिपी है: शंकर, जो परम तत्त्व पर ऐसी उदात्त स्तुति रच सकते थे, कुछ ही क्षण बाद स्वयं को पूर्णतः खो बैठते हैं। चाहे ज्ञान अथवा योग-सामर्थ्य कितना ही विशाल क्यों न हो, केवल शरणागति ही किसी आत्मा को भगवान की अपनी माया से परे ले जा सकती है।



भगवान के अद्भुत कार्य को सुनकर भगवान शिव देवी पार्वती और अपने गणों सहित भगवान विष्णु के धाम वैकुण्ठ में उनके दर्शन हेतु पधारते हैं (श्लोक 1-3)।

भगवान के अद्भुत कार्य को सुनकर भगवान शिव देवी पार्वती तथा अपने गणों के साथ भगवान विष्णु के धाम वैकुण्ठ में उनके दर्शन को आते हैं (श्लोक 1-3)।

## मोहिनी रूप के दर्शन की याचना

अपनी स्तुति अर्पित करने के पश्चात भगवान शिव ने अपनी याचना रखी। उन्होंने भगवान के अनेक अवतार देखे थे, उन्होंने कहा, जिनमें वे प्रकृति के गुणों के साथ क्रीड़ा करते हैं; अब वे उस विशेष सुन्दरी-रूप को देखना चाहते थे जिससे असुर इतने मोहित हुए थे।

अवतारा मया दृष्टा रममाणस्य ते गुणैः ।

सोऽहं तद्द्रष्टुमिच्छामि यत् ते योषिद्वपुर्धृतम् ॥ १२ ॥

अवतारा मया दृष्टा रममाणस्य ते गुणैः सोऽहं तद्द्रष्टुमिच्छामि यत् ते योषिद्वपुर्धृतम्

अर्थ: मैंने आपके वे अवतार देखे हैं जिनमें आप प्रकृति के गुणों के साथ क्रीड़ा करते हैं; अब मैं उस सुन्दरी-रूप के दर्शन करना चाहता हूँ जिसे आपने धारण किया था। (स्कन्ध 8, अध्याय 12, श्लोक 12)

यह सुनकर भगवान विष्णु अर्थगर्भित हँसी हँसे और उत्तर दिया कि उन्होंने वह रूप केवल लोभी असुरों को मोहित करने और देवताओं के हित के लिए धारण किया था। फिर शिव से यह कहकर कि वे उन्हें वह रूप दिखाएँगे जिसे देखने के वे इतने उत्सुक थे, भगवान उसी स्थान पर अन्तर्धान हो गए, जबकि भगवान शिव देवी उमा के साथ चारों ओर देखते हुए प्रतीक्षा करते रहे।



वैकुण्ठ में श्रद्धापूर्वक स्वागत पाकर भगवान शिव भगवान विष्णु को परब्रह्म रूप में महिमामंडित करती एक गहन स्तुति अर्पित करते हैं, और उनसे वह मोहक रूप देखने की प्रार्थना करते हैं जो उन्होंने धारण किया था (श्लोक 4-13)।

वैकुण्ठ में श्रद्धा से स्वीकार किए जाकर भगवान शिव भगवान विष्णु को परम सत्य रूप में महिमामण्डित करती हुई गहन स्तुति करते हैं, और उस मोहिनी रूप के दर्शन की याचना करते हैं जिसे उन्होंने धारण किया था (श्लोक 4-13)।

## महादेव का मोहन

तत्पश्चात्, पुष्पों से समृद्ध एक उद्यान में, एक परम सुन्दर दिव्य सुन्दरी प्रकट हुई, गेंद से मनोहर क्रीड़ा करती हुई, भगवान की अपनी ही माया से जगत को मोहित करती हुई। उसे निहारते हुए भगवान शिव — योगियों में अग्रणी — उसकी उपस्थिति से अभिभूत हो गए और कुछ समय के लिए स्वयं का, अपने पास बैठी देवी पार्वती का, और अपने गणों का भी बोध खो बैठे। उनका मन इतना मोहित हो गया कि वे उस रूप के पीछे

चल पड़े, यहाँ तक कि भगवान की मायाशक्ति का प्रभाव पूर्ण होने पर, उन्होंने स्वयं को भगवान की माया से मोहित हुआ पहचाना और तत्क्षण उस मोह से उबर गए।

लज्जित होने के स्थान पर शिव ने भगवान विष्णु की महिमा को नए सिरे से जाना, जिनकी शक्ति पूर्णतः जानी नहीं जा सकती, और अपने मोह को तनिक भी आश्चर्य न माना — क्योंकि भगवान की माया के समक्ष कौन टिक सकता है? यही, वस्तुतः, परम्परा की समझ में इस प्रसंग का गहन प्रयोजन है: यह दर्शाना कि भगवान की मोहिनी शक्ति इतनी अभिभूत करने वाली है कि योगियों के शिरोमणि शंकर भी उससे खिंच गए, ताकि कोई अन्य जीव कभी स्वयं को अभेद्य न समझे, और सब केवल उन भगवान की शरण लें जो माया से परे हैं।



एक पुष्पित उद्यान में भगवान का मोहक रूप प्रकट होता है, और उनकी अपनी माया से योगियों में श्रेष्ठ भगवान शिव भी क्षण भर के लिए अभिभूत हो जाते हैं — यह शिक्षा कि भगवान की मोहिनी शक्ति किसी को नहीं छोड़ती (श्लोक 18-35)।

एक पुष्पित उद्यान में भगवान का मोहिनी रूप प्रकट होता है, और उनकी अपनी माया से स्वयं भगवान शिव, योगियों में अग्रणी, क्षण भर के लिए अभिभूत हो जाते हैं — यह शिक्षा कि भगवान की मोहिनी शक्ति किसी को नहीं छोड़ती (श्लोक 18-35)।

## भगवान की प्रशंसा और शिव की पुनर्स्थिति

भगवान शिव को अविचल और निर्लज्ज पाकर प्रसन्न होकर, भगवान विष्णु ने अपना मूल रूप पुनः धारण किया और स्नेह से उनसे बोले।

श्रीभगवानुवाच

दिष्टया त्वं विबुधश्रेष्ठ स्वां निष्ठामात्मना स्थितः ।

यन्मे स्त्रीरूपया स्वैरं मोहितोऽप्यङ्ग मायया ॥ ३८ ॥

श्रीभगवानुवाच दिष्टया त्वं विबुधश्रेष्ठ स्वां निष्ठामात्मना स्थितः यन्मे स्त्रीरूपया स्वैरं मोहितोऽप्यङ्ग मायया

अर्थ: भगवान ने कहा — हे देवश्रेष्ठ, यह सौभाग्य की बात है कि स्त्री-रूप में मेरी माया से मोहित होकर भी, तुम अपने ही बल से अपनी स्वाभाविक, अविचल स्थिति में लौट आए। (स्कन्ध 8, अध्याय 12, श्लोक 38)

अन्य कौन पुरुष, भगवान ने पूछा, उनकी माया में एक बार फँसकर उससे उबर सकता है? तीन गुणों की यह माया, उन्होंने शिव को आश्चर्य किया, अब उन्हें कभी अभिभूत न करेगी। इस प्रकार सम्मानित होकर भगवान शिव ने विदा ली, श्रद्धा से भगवान की परिक्रमा की, और अपने गणों के साथ कैलास लौट गए। वहाँ, एकत्रित ऋषियों के समक्ष, उन्होंने पार्वती से स्नेहपूर्वक वह बताया जो उन्होंने देखा था: कि स्वयं वे, भगवान की अपनी किरणों में अग्रणी, विष्णु की मोहिनी शक्ति के वश में विवश हो गए — तो फिर आश्चर्य ही क्या कि अन्य, जो अपने स्वामी नहीं, ऐसा करें।



भगवान अपना मूल रूप पुनः धारण करते हैं और भगवान शिव की अपनी स्थिर अवस्था में लौटने के लिए प्रशंसा करते हैं; स्वस्थचित और अविचलित शिव भगवान की माया की महिमा को नए सिरे से अनुभव करते हैं (श्लोक 37-44)।

भगवान अपना मूल रूप पुनः धारण करते हैं और भगवान शिव की, उनके अविचल भाव में लौटने पर, प्रशंसा करते हैं; शिव, उबरे हुए और अविचलित, भगवान की माया की महिमा को नए सिरे से जानते हैं (श्लोक 37-44)।

## कथा की महिमा

श्रीशुकदेव राजा परीक्षित से यह कहकर उपसंहार करते हैं कि उन्होंने अब भगवान विष्णु के उन कार्यों का वर्णन कर दिया है, जिन्होंने दिव्य कच्छप रूप में मन्थन के समय मन्दराचल को धारण किया। जो इस कथा का बार-बार पाठ या श्रवण करता है उसका प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि भगवान की महिमाओं का वर्णन जन्म-मरण की समस्त थकान को दूर करता है। वे एक नमस्कार से समापन करते हैं।

असदविषयमङ्घ्रिं भावगम्यं प्रपन्ना-  
नमृतममरवर्यानाशयत् सिन्धुमथ्यम् ।  
कपटयुवतिवेषो मोहयन्यः सुरारी-  
स्तमहमुपसृतानां कामपूरं नतोऽस्मि ॥ ४७ ॥

असदविषयमङ्घ्रिं भावगम्यं प्रपन्ना- नमृतममरवर्यानाशयत् सिन्धुमथ्यम् कपटयुवतिवेषो मोहयन्यः सुरारी- स्तमहमुपसृतानां कामपूरं नतोऽस्मि

अर्थ: मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ जिनके चरण, अभक्तों के लिए अगम्य और केवल भक्ति से प्राप्य, शरणागतों के आश्रय हैं; जिन्होंने सुन्दरी का वेश धारण कर देवताओं के शत्रुओं को मोहित किया और मथे हुए अमृत को देवश्रेष्ठों को दिया; और जो अपनी शरण में आए सबकी कामनाएँ पूर्ण करते हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 12, श्लोक 47)

## इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. केवल भगवान ही माया से परे हैं। योगियों में सबसे आगे गिने जाने वाले भगवान शिव भी थोड़ी देर के लिए मोहित हो गए, जबकि माया को धारण करने वाले भगवान स्वयं उससे कभी स्पर्शित नहीं होते। शरण केवल उन्हीं में सुरक्षित है जो माया के स्वामी हैं (श्लोक 35, 39)।
2. माया के समक्ष विनम्रता बुद्धि है, लज्जा नहीं। शिव अपने मोह से लज्जित नहीं हुए, अपितु उसमें भगवान की महिमा देखी, और पार्वती से उसे खुलकर कहा। अपनी दुर्बलता स्वीकार करना ही महानता का चिह्न है (श्लोक 36, 43)।
3. श्रेष्ठतम स्तुति शरणागति से आरम्भ होती है। शिव भगवान के पास माँग लेकर नहीं, अपितु शुद्ध महिमागान के साथ जाते हैं, उन्हें सबका आत्मा और कारण देखते हुए। शरणागति में निहित उपासना ही भगवान तक पहुँचने का सच्चा मार्ग है (श्लोक 4-6)।
4. किसी को मोह से अभेद्यता का दावा नहीं करना चाहिए। यदि स्वयं शंकर माया से खिंच सके, तो कोई जीव अपने बल से स्वयं को सुरक्षित न माने। सतर्कता और भगवान पर निर्भरता सदा आवश्यक हैं (श्लोक 43)।
5. भगवान की महिमाओं का श्रवण जन्म-मरण की थकान दूर करता है। श्रीशुकदेव आश्वासन देते हैं कि इस कथा का पाठ या श्रवण कभी व्यर्थ नहीं जाता। भगवान के कार्यों का स्मरण स्वयं में पावन और मुक्तिदायी है (श्लोक 46)।

## एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय में कुछ गहराई से आश्चर्य करने वाला है, और वह ठीक इसके सबसे आश्चर्यजनक क्षण से आता है: कि स्वयं भगवान शिव, ध्यान के परम स्वामी, वह देव जिन्होंने विष अनहानि पीया और शाश्वत तप में अविचल बैठे रहते हैं, कुछ समय के लिए ही सही, भगवान की माया से अभिभूत हो सके। यदि हम इसे शिव की दुर्बलता की कथा के रूप में पढ़ें, तो हम इसका हृदय ही चूक जाते हैं। यह इसलिए कही गई है, परम्परा कहती है, ताकि हममें से कोई कभी स्वयं को मोह की पहुँच से परे न समझे — और ताकि हम अपना भरोसा अपने बल पर, चाहे वह कितना ही महान हो, नहीं, अपितु उन भगवान पर रखें जो अकेले माया के स्वामी हैं। सबसे सुन्दर है शिव की प्रतिक्रिया। वे न कुचले जाते हैं, न लज्जित होते हैं; वे अपनी ही अविचलता से धैर्य पुनः पाते हैं, भगवान की महिमा को पहचानते हैं, और सारी बात पार्वती से खुलकर कहते हैं, उससे अपमान नहीं, अपितु बुद्धि ग्रहण करते हुए। इसी प्रकार एक महान आत्मा अपनी दुर्बलता का सामना करती है — बिना इनकार और बिना

निराशा के, अपितु ईमानदारी और नवीन भक्ति के साथ। हमारे लिए शिक्षा कोमल और मुक्तिदायी है: हमें संसार के आकर्षणों के प्रति अभेद्य होने का ढोंग करने की आवश्यकता नहीं। हमें केवल, जब हम फँसें, तब — जैसे शिव ने किया — उन भगवान की ओर लौट आना है जो इस सबसे परे खड़े हैं।

## एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज उस एक छोटे-से ढंग को लक्ष्य करें जिसमें आपका मन पथ से हटता है — कोई विक्षेप, कोई लालसा, कोई मोह जो चुपचाप आपका ध्यान बाँध लेता है — और, बिना लज्जा या आत्म-भर्त्सना के, धीरे से लौट आँ, जैसे भगवान शिव लौटे, उन भगवान की ओर जो समस्त माया से परे हैं। कोमलता से दोहराएँ “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” शरण अपने प्रतिरोध-बल में नहीं, अपितु उनमें लेते हुए जो अकेले माया के स्वामी हैं। फँसने के उस क्षण को, जैसे शिव के लिए हुआ, निराशा का नहीं, अपितु नवीन विनम्रता और भक्ति का अवसर बनने दें।

## उपसंहार

आठवें स्कन्ध का द्वादश अध्याय मन्थन-कथा को एक गहन समापन तक लाता है। भगवान शिव वैकुण्ठ आते हैं, विष्णु को परम सत्य रूप में एक भव्य स्तुति अर्पित करते हैं, और भगवान के मोहिनी रूप के दर्शन की याचना करते हैं — केवल उसी माया से क्षण भर के लिए अभिभूत होने को जिसे वे देखना चाहते थे। फिर भी यह प्रसंग अपमानित किए बिना विनयन करता है: शिव अपनी ही अविचलता से उबरते हैं, भगवान की अगम्य महिमा को जानते हैं, और उसे खुलकर कहते हैं, यह सिखाते हुए कि कोई मोह से परे नहीं और केवल भगवान ही उसके स्वामी हैं। श्रीशुकदेव इस आश्वासन के साथ समापन करते हैं कि इस कथा का श्रवण जन्म-मरण की थकान दूर करता है, और उन भगवान को प्रणाम के साथ जो शरणागतों की समस्त अभिलाषाएँ सिद्ध करते हैं। मन्थन की महान कथा पूर्ण होने पर, वर्णन अब शेष मन्वन्तरों और आगे आने वाले युगों की ओर मुड़ता है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

## सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, द्वादश अध्याय, पृष्ठ 784–790।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: [kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-12-the-lords-enchanted-potency-and-lord-siva-hi.html](http://kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-12-the-lords-enchanted-potency-and-lord-siva-hi.html)

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

